कक्षा - 12

इतिहास

भाग - 2

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 7

एक साम्राज्य की राजधानी: विजयनगर

भाग - 4

Pritesh Joshi

आज क्या पढ़ेंगे ?

1. राजकीय केंद्र
2. धार्मिक केंद्र
3. महलों, मंदिरों तथा बाजारों का अंकन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

विजयनगर

- धर्म
  - मंदिर
  - पत्थर
- अन्य
  - लकड़ी
  - → महल
  - → समुदाय

① सभा मण्डप
② महानवमी डिब्बा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महानवमी
→ नामकरण

40 ft

1. सैन्य निरीक्षण
2. अश्वमेध यज्ञ
3. नृत्य
4. कुश्ती
5. पूजा
6. अनुष्ठान
7. वार्षिक
8. दान

महानवमी डिब्बा:- शहर के सबसे ऊँचे स्थानों में से एक पर स्थित "महानवमी डिब्बा" एक विशालकाय मंच है जो लगभग 11000 वर्ग फीट के आधार से 40 फीट की ऊँचाई तक जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नामकरण।

- ऐसे साक्ष्य मिले हैं जिनसे पता चलता है कि इस पर एक लकड़ी की संरचना बनी थी।
- इस संरचना से जुड़े अनुष्ठान, संभवतः सितंबर तथा अक्टूबर के शरद मासों में मनाए जाने वाले दस दिन के हिंदू त्यौहार, जिसे दशहरा (उत्तर भारत), दुर्गा पूजा (बंगाल में) तथा नवरात्री या महानवमी (प्रायद्वीपीय भारत में) नामों से जाना जाता है, के महानवमी (शाब्दिक अर्थ, महान नवाँ दिवस) के अवसर पर निष्पादित किए जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस अवसर पर विजयनगर शासक अपने रुतबे, ताक़त तथा अधिराज्य का प्रदर्शन करते थे।
- इस अवसर पर होने वाले धर्मानुष्ठानों में मूर्ति की पूजा, राज्य के अश्व की पूजा, तथा भैंसों और अन्य जानवरों की बलि सम्मिलित थी।
- नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धा तथा साज़ लगे घोड़ों, हाथियों तथा रथों और सैनिकों की शोभायात्रा और साथ ही प्रमुख नायकों और अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा और उसके अतिथियों को दी जाने वाली औपचारिक भेंट इस अवसर के प्रमुख आकर्षण थे।

- क्या "महानवमी डिब्बा" जो आज अस्तित्व में है, वह इस विस्तृत अनुष्ठान का केंद्र था?
- विद्वानों का मानना है कि संरचना के चारों ओर का स्थान सशस्त्र आदमियों, औरतों तथा बड़ी संख्या में जानवरों की शोभायात्रा के लिए पर्याप्त नहीं था।
- राजकीय केंद्र में स्थित कई और संरचनाओं की तरह यह भी एक पहेली बना हुआ है।

RIICO GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

राजकीय केंद्र में स्थित अन्य भवन

- राजकीय केंद्र के सबसे सुंदर भवनों में एक लोटस (कमल) महल है, जिसका यह नामकरण उन्नीसवीं शताब्दी के अंग्रेज़ यात्रियों ने किया था।
- लेकिन इतिहासकार इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि यह भवन किस कार्य के लिए बना था।

मैकेन्ज़ी :- यह परिषदीय सदन था जहाँ राजा अपने परामर्शदाताओं से मिलता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कमल महल

अधिकांश मन्दिर धार्मिक केंद्र में स्थित थे, लेकिन राजकीय केंद्र में भी कई थे। इनमें से, एक अत्यंत दर्शनीय को हज़ार राम मन्दिर कहा जाता है। संभवतः इसका प्रयोग केवल राजा और उनके परिवार द्वारा ही किया जाता था।

मन्दिर की आंतरिक दीवारों पर उत्कीर्णित रामायण से लिए गए कुछ दृश्यांश सम्मिलित हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हज़ार राम मन्दिर की दीवारों पर मूर्तिकला

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. महानवमी डिब्बा

- लेख
- नामकरण
- इस्तेमाल
- संरचना

Q. कमल महल

- नाम
- इस्तेमाल

Q. हजारराम मंदिर → राजा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

① सुग्रीव - बाली रामायण

② पम्पा देवी

→ राजधानी

हम्पी

→ विजयनगर

→ पम्पा देवी

RIICO GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक केंद्र

राजधानी का चयन

- अब हम तुंगभद्रा नदी के तट से लगे शहर के चट्टानी उत्तरी भाग की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं।
- स्थानीय मान्यताओं के अनुसार ये पहाड़ियाँ रामायण में उल्लेखित बाली और सुग्रीव के वानर राज्य की रक्षा करती थीं।

RIICO GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- अन्य मान्यताओं के अनुसार स्थानीय मातृदेवी पम्पादेवी ने इन पहाड़ियों में विरुपाक्ष, (जो राज्य के संरक्षक देवता तथा शिव का एक रूप माने जाते हैं) से विवाह के लिए तप किया था।
- यह विवाह विरुपाक्ष मन्दिर में हर वर्ष धूम-धाम से आयोजित किया जाता है।
- यह क्षेत्र कई-धार्मिक मान्यताओं से संबद्ध था।

- शासक भी अपने आप को ईश्वर से जोड़ने के लिए मन्दिर निर्माण को प्रोत्साहन देते थे– मन्दिर महत्त्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए।
- यह संभव है कि विजयनगर के स्थान का चयन वहाँ विरुपाक्ष तथा पम्पादेवी के मन्दिरों के अस्तित्व से प्रेरित था।

- यहाँ तक कि विजयनगर के शासक भगवान विरुपाक्ष की ओर से शासन करने का दावा करते थे।
- सभी राजकीय आदेशों पर सामान्यतया कन्नड़ लिपि में "श्री विरुपाक्ष" शब्द अंकित होता था।
- शासक देवताओं से अपने गहन संबंधों के संकेतक के रूप में विरुद "हिन्द सूरतराणा" का प्रयोग भी करते थे। हिंदू सुलतान।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. राजधानी होने को चुनने का कारण?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

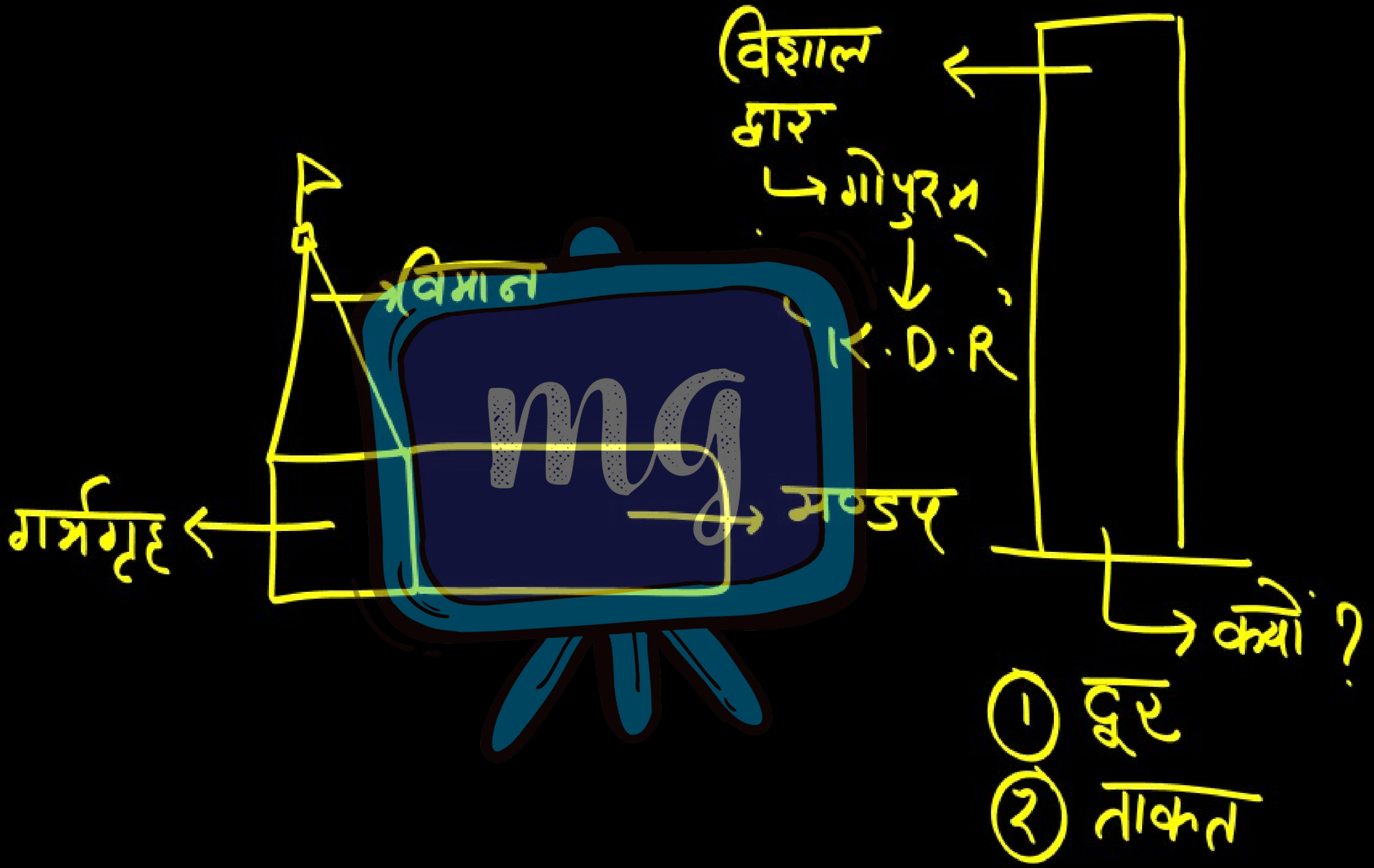

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गोपुरम् और मण्डप

- मन्दिर स्थापत्य के संदर्भ में इस समय तक कई नए तत्व प्रकाश में आते हैं।
- इनका सबसे अच्छा उदाहरण राय गोपुरम् अथवा राजकीय प्रवेशद्वार थे जो अकसर केंद्रीय देवालयों की मीनारों को बौना प्रतीत कराते थे और जो लंबी दूरी से ही मन्दिर के होने का संकेत देते थे।

ये संभवतः शासकों की ताकत की याद भी दिलाते थे।

अन्य विशिष्ट अभिलक्षणों में मण्डप तथा लंबे स्तंभों वाले गलियारे, जो अकसर मंदिर परिसर में स्थित देवस्थलों के चारों ओर बने थे, सम्मिलित हैं।

शैव

- हम दो मन्दिरों को और सूक्ष्मता से देखते हैं–विरुपाक्ष मन्दिर तथा विट्ठल मन्दिर। विरुपाक्ष मन्दिर का निर्माण कई शताब्दियों में हुआ था।
- अभिलेखों से पता चलता है कि सबसे प्राचीन मन्दिर नवीं–दसवीं शताब्दियों का था, विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के बाद इसे कहीं अधिक बड़ा किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मुख्य मन्दिर के सामने बना मण्डप कृष्णदेव राय ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में बनवाया था।
- पूर्वी गोपुरम् के निर्माण का श्रेय भी उसे ही दिया जाता है।
- मन्दिर के सभागारों का प्रयोग विविध प्रकार के कार्यों के लिए होता था।
- जिनमें देवताओं की मूर्तियाँ संगीत, नृत्य और नाटकों के विशेष कार्यक्रमों को देखने के लिए रखी जाती थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अन्य सभागारों का प्रयोग देवी-देवताओं के विवाह के उत्सव पर आनंद मनाने और कुछ अन्य का प्रयोग देवी-देवताओं को झूला झुलाने के लिए होता था।
- दूसरा देवस्थल, विट्ठल मन्दिर, भी रोचक है।
- यहाँ के प्रमुख देवता विट्ठल थे जो सामान्यत: महाराष्ट्र में पूजे जाने वाले विष्णु के एक रूप हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. गोपुरम्
- → क्या
- → क्यो
- → किसने

Q. मंदिर
- विरुपाक्ष मंदिर
- विठ्ठल मंदिर

Q. मंदिर स्थापत्य कला
- → गोपुरम्
- → लम्बे स्तंभ
- → मण्डप

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महलों, मन्दिरों तथा बाज़ारों का अंकन

- हमने विजयनगर के विषय में जानकारी के भण्डार का विश्लेषण किया है – फोटोग्राफ, नक्शे, संरचनाओं के खड़े रेखाचित्र तथा मूर्तियाँ।

यह सब कैसे खोजा गया?

- मैकेन्ज़ी द्वारा किए गए आरंभिक सर्वेक्षणों यात्रा वृत्तांतों और अभिलेखों से मिली जानकारी को एक साथ जोड़ा गया। बीसवीं शताब्दी में इस स्थान का संरक्षण भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण तथा कर्नाटक पुरातात्विक एवं संग्रहालय विभाग द्वारा किया गया।

- 1976 में हम्पी को राष्ट्रीय महत्त्व के स्थल के रूप में मान्यता मिली।
- तदोपरांत 1980 के दशक के आरंभ में विविध प्रकार के अभिलेखन प्रयोग से, व्यापक तथा गहन सर्वेक्षणों के माध्यम से, विजयनगर से मिले भौतिक अवशेषों के सूक्ष्मता से प्रलेखन की एक महत्त्वपूर्ण परियोजना का शुभारंभ किया गया।

- इस विशद प्रक्रिया के सिर्फ़ एक हिस्से को हम बारीकी से देखते हैं।

  यह है मानचित्र निर्माण।

- इसका पहला चरण यह था कि संपूर्ण क्षेत्र को 25 वर्गाकार भागों में बाँटा गया और प्रत्येक वर्ग को वर्णमाला के एक अक्षर से इंगित किया गया।

- फिर इन छोटे वर्गों को पुनः और भी छोटे वर्गों के समूहों में बाँटा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

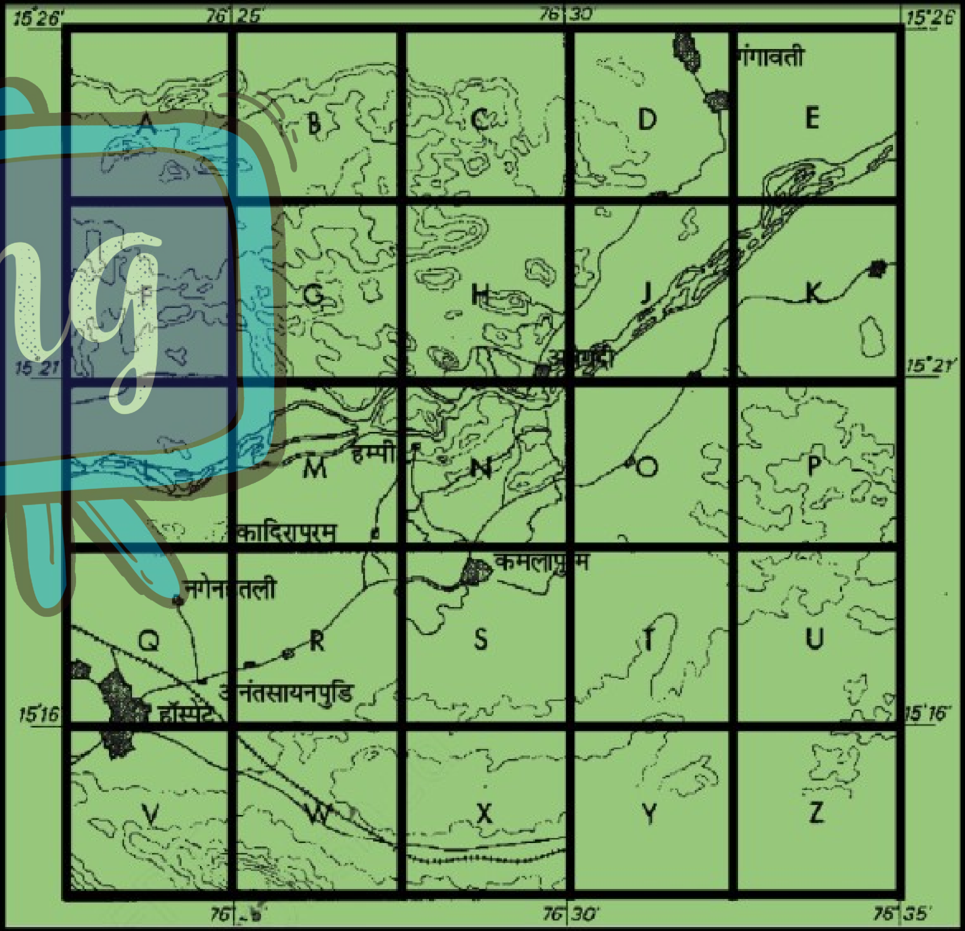

- ये गहन सर्वेक्षण बहुत परिश्रम से किए गए थे, और इनसे हज़ारों संरचनाओं के अंशों–छोटे देवस्थलों और आवासों से लेकर विशाल मन्दिरों तक–को पुनः उजागर किया गया।

उत्तरों की खोज में प्रश्न

- सुरक्षित भवन हमें उन तरीकों के विषय में बताते हैं जिनसे स्थानों को व्यवस्थित किया गया और उन्हें प्रयोग में लाया गया।
- वह हमें यह भी बताते हैं कि किन वस्तुओं और तकनीकों से उनका निर्माण किया गया और कैसे किया गया।

- लेकिन स्थापत्य तत्वों के परीक्षण हमें यह नहीं बताते कि सामान्य पुरुष, महिलाएँ तथा बच्चे जो शहर और उसके आसपास के क्षेत्र में रहने वाली जनसंख्या का एक बड़ा भाग थे, इन प्रभावशाली भवनों के विषय में क्या सोचते थे।
- क्या उनकी शाही केंद्र अथवा धार्मिक केंद्र के किसी भी भाग में पहुँच हो सकती थी, अथवा नहीं ?

- वे लोग जिन्होंने इन विशाल निर्माण परियोजनाओं पर कार्य किया था, इन उद्यमों के विषय में क्या सोचते थे जिसके लिए उन्होंने अपना श्रम दान दिया था?

- हालाँकि, क्या निर्माण करना है, किस स्थान पर, कौन-सा माल प्रयोग करना है और किस शैली का अनुसरण करना है, ये सभी निर्णय शासक लेते थे।
- इतने विशाल उद्यमों के लिए आवश्यक विशिष्ट ज्ञान किसके पास था?
- भवनों के नक्शे कौन बनाता था?

- राजगीर, पत्थर काटने वाले, मूर्तिकार जो वास्तविक निर्माण कार्य करते थे, कहाँ से आते थे?
- क्या उन्हें युद्ध के दौरान पड़ोसी क्षेत्रों से बंदी बनाया जाता था?
- उन्हें किस प्रकार से वेतन मिलते थे?
- निर्माण गतिविधियों का अधीक्षण कौन करता था?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- निर्माण के लिए कच्चा माल कैसे और कहाँ से लाया जाता था?
- ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर हम भवनों या उनके अवशेषों को देखने मात्र से नहीं दे सकते।
- संभवतः अन्य स्त्रोतों के प्रयोग से जारी शोध कुछ संकेत दे सकें।

काल-रेखा-1	
महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन	
लगभग 1200-1300 ईसवी	दिल्ली सल्तनत की स्थापना (1206)
लगभग 1300-1400 ईसवी	विजयनगर साम्राज्य की स्थापना (1336); बहमनी राज्य की स्थापना (1347); जौनपुर, कश्मीर और मदुरई में सल्तनतें
लगभग 1400-1500 ईसवी	उड़ीसा के गजपति राज्य की स्थापना (1435); गुजरात और मालवा की सल्तनतों की स्थापना; अहमदाबाद, बीजापुर तथा बेरार सल्तनतों का उदय (1490)
लगभग 1500-1600 ईसवी	पुर्तगालियों द्वारा गोवा पर विजय (1510); बहमनी राज्य का विनाश; गोलकुंडा की सल्तनत का उदय (1518); बाबर द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना (1526)

काल–रेखा–2	
विजयनगर की खोज व संरक्षण की मुख्य घटनाएँ	
1800	कॉलिन मैकेन्जी द्वारा विजयनगर की यात्रा
1856	अलेक्जैंडर ग्रनिलो ने हम्पी के पुरातात्विक अवशेषों के पहले विस्तृत चित्र लिए
1876	पुरास्थल की मंदिर की दीवारों के अभिलेखों का जे.एफ. फ्लीट द्वारा प्रलेखन आरंभ
1902	जॉन मार्शल के अधीन संरक्षण कार्य आरंभ
1986	हम्पी को यूनेस्को द्वारा विश्व पुरातत्व स्थल घोषित किया जाना